विषय : भारत में विदेशी विश्वविद्यालय।

भारत की नई ताकत

विज्ञान हर समय बदल रहा है। आज की युग में विज्ञान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ज्ञान के बिना आज कोई नहीं आगे बढ़ सकता, क्योंकि हमारा यह विश्व हर क्षण में प्रगति की ओर चल रहा है।

हमारा भारत देश में कई सारे देशीयविद्यालय हैं। कई लोग हमारे भारत में पढ़ाई के लिए आता है। यह हमारी आर्थिक व्यवस्था में ~~बहा~~ बड़ा बदलाव कर चुका है। देशीयविद्यालयों के साथ-साथ विदेशी विश्वविद्यालयों का भी हमारा देश में बड़ी भूमिका है। इसलिए 'भारत में विदेशी विश्वविद्यालय' विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए इस विषय की बारे में हमें समझना चाहिए।

⇒ भारत की पूर्विक विश्वविद्यालय

भारत में एक ऐसा विश्वविद्यालय था जहाँ विश्व के हर कोण से लोग अपने पढ़ाई के लिए आते थे। वह है 'नलन्दा विश्वविद्यालय'। भारत की चरित्र में इस विश्वविद्यालय का महत्व हम देख सकता है।

स्वतंत्रसँग्राम का समय में हमारे भारत में 'नलन्दा' के बिना और आई विश्वविद्यालय का निर्माण हुआ था और वे सब आज भी हमारे देश में ज्ञान प्रदान करने के लिए अग्रसर होकर रहता है।

केरल संस्थान में 'कण्णूर विश्व-विद्यालय' बहुत अधिक प्रसिद्ध है। केवल केरलीय लोग नहीं बल्कि पूरी देश से यहाँ लोग पढ़ाई के लिए आता है। 'चेन्नै', 'कोच्ची', 'दिल्ली', 'बँगलुरू' आदि प्रमुख के प्रदेशों में विज्ञान की एक भँडार भी है।

തിരുത്തി..................... 64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

⇒ विदेशी विश्वविद्यालय की इतिहास

भारत की स्वतंत्र संग्राम की वेला में जब विदेशीय शक्तियों ने हमारा भारत पर शासन कर रहा था तब से हमारा भारत में विदेशी विश्वविद्यालयों का निर्माण शुरु हुई। विदेशीय राज्यों ने हमें बहुत अधिक तंग किया लेकिन उन लोगों से बनी हुई विदेशीय विश्वविद्यालय हमारे लिए बहुत काम की हो गई।

अग्रेज़ों ने भारतीय लोगों पर अपना नियन्त्रण शक्त बनने के लिए अर्थात् उन लोगों ने अपने आपके भलाई के लिए भारत में विदेशी विश्व-विद्यालय शुरु किया था। भारत की निरक्षर जनता वहाँ से अग्रेज़ी और अन्य विषयों पर ज्ञान प्राप्त किया और अपनी आज़ादी की महत्व के बारे में समझा। यह अग्रजों के विरुद्ध युद्ध करने का एक शक्तिशाली हथियार बना।

⇒ भारतीय लोगों के लिए

अंग्रेज़ सरकार का शासन की समय निर्मित हुई 'आन्ग्लो-इंडियन विश्वविद्यालय' को पहला बिदेशी विश्वविद्यालय मानता है। 'कोलकत्ता' में भी बिदेशी विश्वविद्यालय था। भारत में विदेशी विश्व विद्यालय शुरु होने के बाद भारतीय जनता की जीवन में बहुत अधिक बदलाव आया था। इसके बारे में हम देखते हैं :

* विदेशी विश्वविद्यालय शुरु होने के बाद हमारी भारतीय जनों को विज्ञान पाने के लिए अच्छा मौका मिला।
* विदेशीय विश्वविद्यालय में पढने के लिए दूर-दूर से लोग भारत में आने लगा।
* भारत ~~बन~~ विश्व की विज्ञान दायकों में प्रमुख हो गई।
* विदेशीय संस्कृति भारत में आने लगा।
* बहुत अधिक भारतीयों को यहाँ से प्राप्त हुई ज्ञान से बहुत सारे उद्योग का मार्ग मिला।

* भारत की आर्थिक व्यवस्था में विदेशीय विश्वविद्यालय की भूमिका अतुल्य है।
* अंग्रेज़ी ~~भाषा~~ और बाकी भाषा की विज्ञान लोगों को पूरे दुनिया में काम करने के लिए अवसर दिया।
* बहुत अधिक लोग साक्षर बन गई।
* 'वैश्वीकरण' के कारण नई-नई ~~संस्था~~ संस्थाओं और व्यापारों की शुरु हो गई।

⇒ वैश्वीकरण (आगोलीकरण) को विदेशी विश्व विद्यालय पर प्रभाव।

श्री अमरत्या सेन की राय में 'वैश्वीकरण का परिणाम है'। वैश्वीकरण आज बहुत अधिक प्रभावशाली हो गया है। जिससे हम अन्य राज्यों से व्यापार कर सकते है, विज्ञान के लिए जा सकता है और विज्ञान सार्वत्रिक बन गया है। हम देखते है कि वैश्वीकरण विदेशी विश्व विद्यालयों को कैसा प्रभाव किया है।

वैश्वीकरण से आज दुनिया एक छोटा सा शहर बन गया है। घर पर रहकर ही हमें दुनिया की सारे बातों को समझ सकता है। वैश्वीकरण को विदेशी विश्वविद्यालयों पर बडा प्रभाव है।

वैश्वीकरण से बहुत अधिक लोग पढाई के लिए अन्य राज्यों पर जाना है और वहाँ से विद्या प्राप्त करना है। इसी तरह हमारे भारत में भी बहुत अधिक लोग पढाई के लिए आता है। जिससे आज विदेशी विश्वविद्यालय और भी प्रसक्त हुई है।

⇒ भारत में विदेशीय संस्कृति

विदेशी विश्वविद्यालयों के सबसे बडा नकारात्मक प्रभाव यह है कि हमारे भारत में विदेशीय संस्कृति का पालन करना। आज का युग में यह

एक आदत पड गई है। विदेशीय संस्कृति को अपनाकर भारतीय अपने भारतीय संस्कृति को भूल जाता है। यह एक अच्छा आदत नही है। हम यह सच्चाई को समझना है कि 'भारतीय संस्कृति है नैतिकता की संस्कृति'। उसका पालन किया तो हम केवल विज्ञान में नही बल्कि अपने ज़िंदगी में विजय प्राप्त करेंगे।

अंग्रेजी परिज्ञान से बहुत अधिक लोग भारत छोड़कर अन्य राज्यों पर चले जाता है। यह भी अच्छा नही है। भारतीय संस्कृति के साथ - साथ हमें अन्य संस्कृति को प्यार करना है। लेकिन अन्य संस्कृति पर भारतीय संस्कृति से अधिक प्यार होना बिलकुल ठीक नही है। विदेशीय संस्कृति का पालन से आज भारतीय अपने पवित्र संस्कृति, नैतिकबोध, अहिंसा, भाईचारा, आदि गुणों को छोडकर केवल अपने जीवन के बारे में सोचता है।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

⇒ भविष्य में

विज्ञान एक अमूल्य तोहफ़ा है। विज्ञान को हमसे कोई नहीं चीन सकता। भविष्य में विदेशी विश्वविद्यालयों का प्रसक्ति और अधिक बढ़ जाएगी। हमारा भारत की उन्नति के लिए विश्व विद्यालयों के साथ-साथ देशीय विद्यालय में भी होना ज़रूरी है। विदेशी विश्वविद्यालय को कई नकारात्मक प्रभाव है। लेकिन इसे सोच समझकर अपनाए तो भविष्य के लिए अच्छा होगा।

भारतीय संस्कृति को प्रथम स्थान देना है। हमारा देश की उन्नति के लिए परिश्रम करना हमारा दायित्व है। इसलिए देश की मूल्यों को हम संरक्षण और पालन करना चाहिए। विज्ञान के साथ-साथ देशप्रेम को भी जरूरत है। हमारा भारत की उन्नति के लिए हम अपना चाहिए।

हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम कहा है कि 'सपना वही होना है जो हमें नींद नहीं देता है'। इसी प्रकार भारत की नई ताकत बनने में विदेशी विश्वविद्यालयों को ~~हम~~ परिवर्तित करना है और आगे बढ़ना है। तकनीक की इस नवयुग में इसी विश्वविद्यालयों को हम पालन करके ~~विस~~ ~~विस~~ विजय प्राप्त करना है।